ISSN 2278-0939

"गिजू भाई बधेका के साहित्य में अन्तर्निहित ज्ञान मीमांसा का समीक्षात्मक अध्ययन एंव वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनकी प्रासांगिकता"

अब्दुल मन्नान बाबर
शोध छात्र (शिक्षा शास्त्र) आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

प्रो0 राजकुमारी सिंह
प्रोफेसर एवं निदेशक आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

सारांश

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एंव कला–कौशल में वृद्धि एंव व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। उसे सभ्य, सुसंस्कृत एंव योग्य नागरिक बनाया जाता है और कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता–पिता एंव परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखानने लगते हैं। जब बच्चा कुछ बड़ा होता है तो उसे, बैठने–उठने, चलने–फिरने, खाने–पीने तथा सामाजिक आचरण की विधियाँ सिखाई जाने लगती हैं। जब वह तीन–चार वर्ष का होता है तो उसे पढ़ने–लिखना सिखाने लगते हैं। इसी आयु में उसे विद्यालय भेजना प्रारम्भ किया जाता है। विद्यालय में उसकी शिक्षा बड़े सुनियोतित ढंग से चलती है। विद्यालय के साथ–साथ उसे परिवार एंव समुदाय में भी कुछ न कुछ सिखाया जाता है। और सीखने–सिखाने का यह क्रम विद्यालय छोड़ने के बाद भी चलता रहता है और जीवन भी चलता है। और विस्तृत रूप में देखें तो किसी समाज में शिक्षा की यह प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। अपने वास्तविक अर्थ में किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने–सीखाने की यह सप्रयोजन प्रक्रिया ही शिक्षा है।

प्रस्तावना

प्राचीन काल में आवश्यकता के अनुसार शिक्षा का विकास हुआ। प्रत्येक युग में उस समय की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा व्यवस्था का विकास हुआ। किसी भी युग में और काल में जब अत्याचार, व्यभिचार व भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता है जिसके परिणाम स्वरूप सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक मूल्यों में ह्रास होने लगता है तब एक नवीन युग का आविर्भाव होता है उस समय ऐसी आलौकिक शक्तियों का अभ्युदय होता है जिससे सामाजिक धार्मिक और राजनैतिक सभी परिस्थितियों में नवजागरण का संचार प्रारम्भ होने लगता है। परिणामस्वरूप गहन नीरवता में आशा को ज्योति का प्रस्फुटन होने लगता है।

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव व्यक्तित्व का विकास होता है। यह सर्वविदित है कि सफलता पूर्णयता शिक्षा के द्वारा ही संभव होती हैं। भारत की भूमि विभिन्नताओं वाली भूमी है इस पर अनेक प्रकार की जातियाँ, भाषा, रंग–रूप, वेश,भूषा और संस्कृति विद्यमान है किन्तु अनेक विभिन्नताओं के होते हुये भी भारत में अनेकता में एकता है, इस एकता के पीछे जिस वस्तु का सहयोग है वह है शिक्षा। जो कुछ भी साधन या व्यवहार मान के ज्ञान का विकास करें, भावनाओं व इच्छाओं का परिष्कार करें, तर्क–चिन्तन का विकास करें, वही औपचारिक व अनोपचारिक रूप में शिक्षा है।

शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य मानव व्यवहार का परिमार्जन करना है तथा इसके साथ ही संसकृति का हस्तान्तरण करना भी हैं क्योंकि शिक्षा के माध्यम से संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती रहती है।

राष्ट्रीय एंव अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षाविदों ने अनेक प्रयासों द्वारा शिक्षा के गम्भीर प्रश्नों को हल करने का साहस किया है। किन्तु शिक्षा का स्वरूप कैसा हो, हर बार अनुत्तरित रह जाता है। शिक्षा की नई नीति (1985–86) ने पर्याप्त अग्निशमन किया। किन्तु अनेक बिन्दु अभी भी भारत की संस्कृति तथा आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अनदेखे रह गए हैं। स्वतन्त्रता उपरान्त तीव्र गति से बदलते हुए भारतीय समाज को शिक्षा ने बदलाव की आवश्यकता महसूस होने से यह निष्टकर्ष निकलता है कि हमें निरन्तर शिक्षा के लक्ष्यों के प्रति अति जागरूक और चेतन रहने की आवश्यकता है अन्यथा 'स्पूतनिक' 'वाथजर' और 'डिस्कवरर' के इस युग में हम अन्य राष्ट्रों से विछुड़ जायेंगे और हमारा विश्व शिरोमणि होने का स्वप्न भी ध्वस्त हो जाएगा। स्मरणीय रहे कि भारत बहुत लम्बे काल तक विश्व का गुरू रहा।

शिक्षा के क्षेत्र में गिजू भाई बधेका जी ने पराधीन विचारधारा में वो महत्वपूर्ण कार्य किया है जो विश्व इतिहास में एक अद्भुत घटना है। उनकी मान्यता भी कि राष्ट्रीय चरित्र के भविष्य के लिये आने वाली पीढ़ी को शिक्षा की उत्तमोत्तम व्यवस्था प्रदान की जानी चाहिये और राष्ट्र के विविध धर्मावलम्बियों में राष्ट्रीयता एंव देश भक्ति की भावना शिक्षा द्वारा विकसित की जानी चाहिये। यही कारण है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय राष्ट्रीय आन्दोलन का केन्द्र बना हुआ था।

गिजू भाई बधेका जी शिक्षा के माध्यम से ऐसे "व्यक्ति" के निर्माण के पक्षपाती थे, जो चरित्रवान होने के साथ–साथ आर्थिक, प्राविधिक, राजनीतिक एंव आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण हो। वह अपनी जीविका प्राप्त करने की सामर्थ्य रखता हो। उसे

ISSN: 2230:8938

जीविका प्राप्त करने के लिये दर–दर की ठोकरें न खानी पड़े। गिजू भाई बधेका जी की मान्यता है कि यदि शिक्षा द्वारा इस प्रकार के व्यक्ति का निर्माण नहीं होता तो वह शिक्षा निरर्थक और निर्जीव है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षणः–

आचार्य, एस.आर. (1967) द्वारा'' उन्नीसवी और बीसवीं शताब्दी में भारतीय शिक्षा के सि(ान्त तथा अभ्यास पर प्रसि(भारतीय शिक्षाविदों का योगदान का अध्ययन'' किया गया। प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि इस कालखण्ड में भारत में राष्ट्रीय शिक्षा क आंदोलन के जन्म तथा विकास के साथ–साथ राष्ट्रीय चेतना के विकास क्रम की प्रक्रिया का स्वरूप भी तय हुआ था, जिनमें इन प्रसि(व्यक्तियों का महत्वपूर्ण योगदान था। भारतीय शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षण प(तियाँ और संगठन पहले से ही निर्धारित हुए थे तथा उनकी पुनः परीक्षा राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिए आवश्यक थी।

एम.टी.एम.जी. (1968)–''महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों में व्यक्तित्व का प्रत्यय'' विषय का स्पष्टीकरण व अवबोध करने की दृष्टि से अपना शोध कार्य सम्पन्न किया।

एम.राय (1986) द्वारा ''पंडित मदनमोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का अध्ययन'' किया गया। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य मालवीय जी के परिवार तथा सामाजिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना मालवीय जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों, महत्व और प्रकृति का अध्ययन करना तथा मालवीय जी के अनुसार छात्रों के उत्तरदायित्व, पाठ्यक्रम पर उनके विचार, धार्मिक शिक्षा, स्त्री शिक्षा आदि का अध्ययन करना था।

वी.वी.,गोगेली (1991) ने ''नई शिक्षा नीति के प्रकाश में आचार्य विनोबा भावे के शिक्षा दर्शन का अध्ययन'' करते हुए उन तत्वों को इंगित किया है जिनकी झलक नयी शिक्षा नीति में मिलती है।

द्विवेदी, कमला (1991) ने ''गाँधी के शिक्षा दर्शन का अध्ययन'' करते हुए उनके शैक्षिक विचारों की अरस्तु, कान्ट, हीगल, हाब्स, लाक, शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

अध्ययन की आवश्यकता एंव महत्वः –

गिजू भाई बधेका जी के शैक्षिक विचार वर्तमानकाल में शिक्षा जगत में एक नवीन प्रकाश की किरणे बिखेर सकते हैं क्योंकि वर्तमान शिक्षा जगत को जिन लक्ष्यों और आदर्शों की अधिक आवश्यकता है। वे गिजू भाई बधेका जी के शैक्षिक विचारों में निहित हैं। इसी कारण से शोधकर्ता ने ''गिजू भाई बधेका के साहित्य में अन्तर्निहित ज्ञात मीमांसा का समीक्षात्मक अध्ययन'' एंव ''वर्तमान परिपक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता'' नामक विषय शोध अध्ययन हेतु चुना है। अतः शोधकर्ता अपने शोध के माध्यम से गिजू भाई बधेका जी के शैक्षिक विचारों को जानने का प्रयास करेगा ताकि उनके उनके विचारों का अध्ययन कर वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे इनकी महत्ता देखकर इनको अपनाया जा सके।

भारत में वर्तमान काल में जो शिक्षा प(ति प्रचलित है। वह विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास में सहायक बनने के बजाय बाधक बन गई है। शैक्षिक मूल्य नष्ट हो गये हैं। इस प्रकार की परिस्थितियों में ऐसी शिक्षण प्रणाली की व्यवस्था की जानी उचित होगी, जो सम्पूण समाज को ज्ञान प्रदान करें, नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित कर पायें। इन महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करने में महान शिक्षाशास्त्री व दार्शनिक गिजू भाई बधेका जी के शैक्षिक विचार अवश्य ही उपयोगी हैं।

अध्ययन के उद्देश्यः–

1. शिक्षा का अर्थ एंव उद्देश्यों पर गिजू भाई बधेका जी के विचारों का अध्ययन करना।
2. गिजू भाई बधेका जी के जीवन व कार्यों तथा शैक्षिक विचारों को प्रकाश में लाना।
3. गिजू भाई बधेका जी के पाठ्यक्रम एंव शिक्षण विधियों का अध्ययन करना।
4. अनुशासन एंव बाल शिक्षा के सन्दर्भ में गिजू भाई बधेका जी के विचारों को प्रकाश में लाना।

अध्ययन की अवधारणऐं : –

1. गिजू भाई बधेका जी के शैक्षिक विचार वर्तमान भारतीय शैक्षिक प्रणाली में महत्व रखते हैं।
2. गिजू भाई बधेका जी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के लक्ष्य एंव उद्देश्य वर्तमान शैक्षिक प्रणाली के विकास में महत्व रखते हैं।
3. गिजू भाई बधेका जी द्वारा वर्णित शिक्षण विधियाँ वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिक है।
4. गिजू भाई बधेका जी द्वारा वर्णित शिक्षा वर्तमान भारतीय शिक्षा के विकास में सहायक है।

ISSN: 2229-3620

अध्ययन में सम्मिलित व्यक्तित्वः –

गिजू भाई बधेका जी–

हमारे देश में समय–समय पर अनेकों महापुरूषों ने इस भूमि पर जन्म लिया है। उन्हीं में गिजू भाई बधेका जी का नाम भी सूर्य की भांति चमकता है। गिजू भाई बधेका जी उन्नीस वीं शताब्दी के एक महान दार्शनिक, समाज सुधारक, धार्मिक सुधारक के साथ–साथ महान शिक्षाशास्त्री भी थे।

गिजू भाई बधेका जी का शिक्षा दर्शन तत्व मीमांसीय एंव ज्ञान मीमांसीय दोनों ही दृष्टिकोण पर आधारित था। उन्होंने नैतिक जगत के साथ यथार्थ सत्ता, ब्रहम के ज्ञान को भी अपनी शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया। गिजू भाई बधेका जी ने संसार के भौतिक एवं वैज्ञानिक विकास पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है।

गिजू भाई बधेका जी की विधारधारा ततकालीन सामाजिक जरूरत के अनुसार शिक्षा के कुछ उद्देश्य निश्चित किये जो निम्नवत् है–

चारित्रिक विकास का उद्देश्य

1. प्राचीन शिषा की रक्षा एंव भौतिकवाद से समन्वय का उद्देश्य।
2. बाल शिक्षा के विकास का उद्देश्य . मातृभाषा के प्रयोग का उद्देश्य।

समस्या का सीमांकन–

प्रस्तुत शोध में गिजू भाई बधेका जी के शिक्षा संबंधी विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता को प्रस्तुत करने को प्रयास किया गया। यह शोध अध्ययन गिजू भाई बधेका जी द्वारा प्रस्तुत शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधि, शिक्षक, गुरू–शिष्य, जन शिक्षा के सम्बन्ध में दिये गये विचारों तक ही परिसीमित है।

शोधे विधि एंव प्रक्रियाः –

वर्तमान अध्ययन मूल रूप से गिजू भाई बधेका जी के ग्रन्थों, लेखो तथा अन्य स्रोतों के आधार पर उनके शिक्षा दर्शन को सुव्यवस्थित करने और उनके दर्शन के आधार पर शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य तथा मूल्य और शिक्षण प(तियों आदि की मीमांसा प्रस्तुत करने हेतु नियोजित किया है।

शोधे विधि का चयनः –

ऐतिहासिक अनुसंधान का सबसे बड़ा गुण वर्तमान पर प्रकाश डालने की क्षमता हैं वर्तमान शिक्षा प(ति को प्रकाशित करने के लिए प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक विधि को अपनाया जायेगा। इसके अन्तर्गत गिजू भाई बधेका जी की शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा का वैज्ञानिक अध्ययन किया जायेगा। ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का नेतृत्व शिक्षा के क्षेत्र में इसलिए है कि इसके द्वारा ही आज प्रचलित शैक्षिक परिपाटियो का उद्गम कैसे हुआ? किसी उच्च कोटि की शैक्षिक संस्था ने विकास कैसे किया? विगत में अपनायी गयी बहुत सी शैक्षिक नीतियों के क्याा परिणाम रहे? ये महत्वपूर्ण प्रश्न है और उनकी प्रति उत्तर ऐतिहासिक अनुसंधान से ही मिल संकता है।

गिजू भाई बधेका जी के भाषण तथा रचनाओं के आधार पर उनके शिक्षा दर्शन को सुव्यवस्थित करने और उनके दर्शन के प्रयोगात्मक आधार पर शिक्षा का स्वरूप, उद्देश्य तथा शिक्षण पद्धतियों आदि की मीमांसा प्रस्तुत करने के लिए नियोजित किया गया है। गिजू भाई बधेका जी का शिक्षा दर्शन अतीत में उनके द्वारा रचित रचनाओं तथा उनके शिक्षा दर्शन पर आधारित अन्य लेखकों के ग्रंथा, पत्र पत्रिकाओं में दृष्टिगोचर होता है। ये सभी ग्रंथ ऐतिहासिक स्रोत से संबंधित है। इन्हीं के आधार पर गिजू भाई बधेका जी का शिक्षा दर्शन उभर कर सामने लाने में सहायता प्राप्त होगी।

जनसंख्या एवं न्यादर्शः –

प्रस्तुत अध्ययन में गिजू भाई बधेका जी द्वारा रचित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पत्रों का तथा गिजू भाई बधेका जी के बारे में विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों, लेखों तथा अन्य अध्ययन साम्रगी का अध्ययन किया गया।

चूकिं समय तथा शक्ति को दृष्टिगत रखते हुए गिजू भाई बधेका जी पर सम्पूर्ण विषय सामग्री को सम्मिलित करना संभव नहीं था। इसलिए प्रस्तुत शोध में गिजू भाई बधेका जी के शैक्षिक दर्शन एवं विचारों पर आधारित चुनिंदा पुस्तकों, पत्रों, भाषणों एवं लेखों का प्रयोग अध्ययन एवं विश्लेषण के लिए किया गया।

तथ्यों का संकलनः –

इसम निम्न साधन व स्रोत प्रयोग में लाये गये।

1. प्राथमिक स्रोत– इसके लिए गिजू भाई बधेका जी के कृत साहित्य का अध्ययन करना।
2. द्वितीय स्रोत– गिजू भाई बधेका जी के जीवन दर्शन पर अन्य लेखकों द्वारा लिखे साहित्य का अध्ययन करना